''अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भारत सरकार द्वारा स्वीकृत 'विशेष आवरण' का अनावरण''

समाज के व्यवहार में धर्म का अवतरण होना चाहिए

– आचार्य श्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 8 मार्च, 2009।

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवरण में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भारत सरकार द्वारा स्वीकृत एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा जारी 'विशेष आवरण' का अनावरण राजस्थान पश्चिम क्षेत्र भारतीय डाक विभाग के पोस्टल सर्विसेज डायरेक्टर डॉ. सचिन मित्तल द्वारा किया गया। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सचिन मित्तल व विशेष अतिथि राजेश पहाड़िया थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूज्य प्रवर फरमाया ने वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन और समस्याएं है तीन हजार पैंसठ से भी ज्यादा। एक दिन में अनेक समस्याएं सामने आती है। क्योंकि समाज संगठन और अनेकता वहां समस्या आना स्वाभाविक है। जहां एक है वहां कोई समस्या नहीं होती है। आदमी बुद्धिमान है, समस्या आती है और उसका समाधान खोजता है एक समस्या बहुत बड़ी आज हो रही है कि परिवारों का विघटन हो रहा है। महिला के बिना परिवार नहीं बनता। नारी में कुछ ऐसी शक्तियां है जो परिवार का संचालन कर सकती है, पिता नहीं कर सकता। महिला में जो धैर्य, सूझबूझ परिवार को चलाने की होती है, पुरुष में दूसरे प्रकार की बुद्धि होती है। मस्तिष्क में अनेकों प्रकोष्ठ हैं और अनेक न्यूरोंन्स के कनेक्शन है कि जिनकी गणना करना मुश्किल है। महिला के न्यूरोंन्स के कनेक्शन अलग प्रकार के हैं और पुरुष में अलग प्रकार के होते हैं। पुरुष की क्षमताएं अलग प्रकार की है, महिला की क्षमता अलग प्रकार की होती है।

आचार्य प्रवर ने आर्थिक प्रलोभन को भ्रुण हत्या का कारण बताते हुए फरमाया कि अर्थ अनर्थ पैदा करता है, इसलिए भगवान महावीर ने अहिंसा और अपरिग्रह को कभी अलग नहीं किया एक सिक्के के दो पहलू। एक पहलू है – हिंसा। दूसरा परिग्रह तो फिर एक सिक्के के दो पहलू को कभी अलग नहीं किया जा सकता। आर्थिक प्रलोभन इतना बढ़ गया और वह भ्रुण हत्या करा रहा है। उसके पीछे दहेज की समस्या, आर्थिक समस्या न जाने कितनी आर्थिक समस्याएं है उससे विवश होकर मनुष्य में क्रूरता पैदा होती है और वह ऐसा एक घिनौना और निंदनीय कार्य करता है वह समाज जिस समाज में पशुओं की हत्या की जाती है अच्छा समाज नहीं होता। गांय, भैंस, ऊंट, बकरी जो सहयोगी हैं जिनके बिना जीवन नही चलता, किंतु आदमी में क्रूरता है उनकी हत्या करता है। नारी के बिना घर का अस्तित्व नहीं होता फिर भी वह नारी की हत्या करता है उसके पीछे भी वह आर्थिक क्रूरता काम कर रही है। हम जड़ की बात करें तो समाज में जो अर्थ के आधार पर चलने वाली कुछ गलत प्रवृत्तियां है दहेज आदि की उनको कैसे समाप्त कर सकें। इस पर भी हमारा चिंतन होना चाहिए।

आचार्य श्री ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को एक प्रेरणा बताते फरमाया कि एक दिवस एक प्रेरणा होती है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी एक प्रेरणा है, जिसके निमित से कुछ सोचने का, चिंतन करने का अवसर मिलता है। यह कार्य जो चल रहा है अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल इस कार्य को आगे बढ़ा रहा है वह एक प्रेरणा है। आचार्य तुलसी की एक प्रेरणा मिली थी और आचार्य तुलसी ने जिस रूप में अहिंसा के व्यावहारिक रूपों को प्रस्तुत किया वह बड़े महत्त्वपूर्ण है। बहुत लोग समझ नहीं पाते कहते हैं यह धर्म का नहीं समाज का काम है। समाज के व्यवहार में ही तो धर्म का अवतरण होना चाहिए कि जिस समाज का व्यवहार करुणापूर्ण दयापूर्ण, संवेदनशीलतापूर्ण और मानवतापूर्ण होता है तो मानना चाहिए कि उस समाज में धर्म का अवतरण हो रहा है और जिस समाज में कोरा पूजा–पाठ, क्रिया काण्ड चलता है, क्रूरता है, धोखा है, बाजार भी शुद्ध नहीं है, अनैतिकता है तो मानना चाहिए कि उस समाज ने धर्म को समझा नहीं। केवल क्रियाकाण्ड करना दस–बीस मिनट धर्म मान लिया और जीवन भर बुराई करें एक गलत धारणा जो बनी हुई थी उसे आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से और नये मोड़ के माध्यम से इन प्रवृत्तियों को बदलने का जो एक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किया और पथ दर्शन दिया, वही एक प्रेरणा काम कर रही है और मैं मानता हूं कि इस बारे में महिला मण्डल बहुत सक्रिय और जागरूक है और जागरूकता से काम कर रहा है और इस काम को और आगे बढ़ाना है। इस कार्य में दूसरी–दूसरी संस्थाओं का भारत सरकार और राज्य सरकार की संस्थाओं का भी जो योग मिल रहा है कि दूसरे लोग भी इस अच्छे कार्य में सहयोगी बनना चाहते हैं मैं मानता हूं जब तलपट अच्छा होता है केनवास अच्छा होता है तो अच्छा चित्र बनाने की सुविधा हो जाती है और केनवास भी अच्छा नहीं तलपट भी अच्छा नहीं, पृष्ठभूमि अच्छी नहीं तो वहां कोई काम हो नहीं सकता। आज बहुत आवश्यक है कि हम धर्म के बारे में भी कुछ नया चिंतन करें।

जीवन व्यवहार में धर्म का अवतरण कैसे हो। कन्याभ्रूण हत्या धार्मिक जगत में बहुत हो रही है। वे समझ नहीं रहे हैं इस सच्चाई को कि आखिर धर्म है क्या। जब तक हम धर्म, समाज और समाज की समस्याएं और वहां व्यवहार कि किस प्रकार के व्यवहार से समस्याओं का समाधान किया जा सकता है इस पर पूरा गहरा चिंतन नहीं करेंगे तो बुराई को रोकना बड़ा कठिन है। सरकार कोई कानून बना सकती है, आखिर पालन तो समाज को करना है। आवश्यक है कि हम समाज में करुणा की चेतना को जगाएं, संवेदनशीलता की चेतना को जगाएं और परिवार कैसे स्वस्थ, अच्छा और सुखद हो सकता है इस चेतना को भी जगाएं और प्रयोग करें जो प्रेक्षाध्यान के माध्यम से सौहार्दपूर्ण परिवार की चर्चा ही नहीं शिविर लग रहे हैं, प्रयोग चल रहे हैं अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं कार्यक्रम व्यापक बने और महिला मण्डल इस कार्य के लिए जो काम कर रही है और भी कुछ नये साधन अपनाएं। नये प्रयोग अपनाएं जिससे कार्य समाज व्यापी बन सके और समाज समझ सके और समाज की नई चेतना जागृत हो। इस दिशा में और अधिक चिंतन करना है और काफी नये प्रयोग करके इसको व्यापक बनाना है कि फिर वह डाक टिकट के माध्यम से नहीं आपका काम आकाशीय रिकॉर्ड में चला जाए और वहां के जन मानस कर सके वहां विकिरण सूर्य की किरणों

के साथ एक नया प्रकाश दे सके तो यह कार्य जो सबसे महत्त्वपूर्ण है करने का काम है।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारी भावना यह होती है कि जहां आत्मतुला का सिद्धांत मानते हैं एक चिंटी को भी सताना मन में प्रकम्पन्न पैदा करता है तो भला एक पंचेन्द्रिय प्राणी को मार देना एक भ्रूण है वह पूरा मनुष्य ही है, पूरा विकसित है उसको मार देना गहरी क्रूरता है वह क्रूरता लोभ के कारण आ रही है। डॉक्टर ये काम करते हैं, लोभ के कारण करते हैं, माता–पिता के मन में भी छिपी हुई लोभ की भावना है। हम कैसे एक परिग्रह की सीमा की चेतना और करुणा को जगा सकें इस दिशा में चिंतन और प्रयत्न चले तो मैं मानता हूं कि यह कार्य बहुत सफल हो सकता है और अहिंसा का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है केवल वह कागजी न रहकर एक व्यवहारिक रूप ले सकता है। इस दिशा में सबको एक और दिशा खोजनी चाहिए, एक नया आयाम खोजना चाहिए जिससे यह कार्य शक्तिशाली और व्यापक बन सके।

युवाचार्य प्रवर ने फरमाया कि जीव मात्र में इस बात की समानता है कि सब जीना चाहते हैं कोई मरना नहीं चाहता। महिला का मूल कर्त्तृत्व है मातृत्व, मातृत्व धर्म उसमें होता है उसमें कहीं कमी आ जाती है तो फिर दूसरी समस्या पैदा हो सकती है, मां का मुख्य कार्य है संतान के प्रति ध्यान देना, संतान को संस्कारी बनाना। महिला में सशक्ति आ जाती है तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है।

साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि आज के युग में महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के मायने तभी सार्थक हो सकते हैं जब पंचायत, विधानसभा और संसद तक यह आवाज उठाई जाए ऐसे संस्कार विकसित किये जाए कि ''बेटियां जन्नत है हबिजों की, बेटियां जातक कथाएं है बुद्ध की और बेटियों पर नाज करते हैं लोग'' लेकिन मनुष्य की मानसिक कुंठाओं का अंत नहीं किया जा सकेगा तब तक इस देश में बेटियां सुरक्षित नहीं रहेगी। अगर बेटियां सुरक्षित नहीं है तो माताएं कहां से आएगी और माताओं के बिना इस सृष्टि का निर्माण कैसे होगा।

इस अवसर पर डाक तार विभाग के अधिकारी डॉ. सचिन मित्तल ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी ज्ञान ज्योति से प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, सशक्त नारी' के जो आयाम दिये हैं वे महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने महिला मण्डल आदि संस्थाओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आपने जिस कार्य को चुना है वह संदेश आपका घर–घर पहुंचेगा।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सौभाग बैद ने कहा कि पूज्यवरों के आशीर्वाद वे अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल चुनिदा संस्थाओं में अपना नाम दर्ज कराया है। इस विशेष आवरण से हमें यह सम्मान मिला है जो सम्पूर्ण नारी का सम्मान है एक ऐतिहासिक सफलता मिली है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की महामंत्री श्रीमती वीणा बैद ने पूज्यवरों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि समाज में स्वस्थता निर्माण हुआ है।

सुन्दर भविष्य का निर्माण सन् 1966 से आज तक 55 हजार महिला मण्डल की सदस्याएं सतत गतिशील है। आचार्य तुलसी की परिकल्पलाओं को साकार रूप दिया जा रहा है।

इस समारोह में फीलातलिक सोसाइटी ऑफ राजस्थान के महामंत्री श्री राजेश पहाड़िया, कार्यक्रम के संयोजक श्री अमित सुराणा, जैन विश्व भारती लाडनूं के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया, प्रवास व्यवस्था समिति बीदासर के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने किया।

शालिनता के साथ होली मनाएं : युवाचार्य श्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री ने फरमाया कि होली के त्यौंहार को व्यवहार में शालीनता रखते हुए मनाना चाहिए। उन्होंने फरमाया कि पूज्य आचार्य प्रवर बीदासर में प्रवास है इसलिए यह संकल्प हो कि होली में शराब, भांग आदि का नशा नहीं करते हुए मनाएं तो अधिक सार्थकता सिद्ध होगी।

''दैनिक जीवन में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का वैज्ञानिक उपयोग'' विषय पर संगोष्ठी आयोजित

बीदासर, 8 मार्च।

''दैनिक जीवन में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का वैज्ञानिक उपयोग'' विषय पर संगोष्ठी आयोजित में आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा कि प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का उद्देश्य है शरीर की स्वस्थता के साथ मानसिक एवं भावात्मक विकास होना चाहिए। जिससे व्यक्ति अपने रसायनों में परिवर्तन कर सकता है।

प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलालजी जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान योग के शोधार्थी आसन, प्राणायाम की जानकारी दी।

– अशोक सियोल
99829 03770